

द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी जी का बालकों के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव

डॉ. अंजनी वशिष्ठ

प्राचार्य (बी.एड. कॉलेज), बैंक कॉलोनी, शमशाबाद रोड, आगरा, उत्तर प्रदेश

सार

वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो..., सूरज निकला चिड़िया बोलीं, कलियों ने भी आंखें खोलीं..., सामने पहाड़ हो, सिंह की दहाड़ हो...। आपके बचपन की यादों को ताजा कर देने वाली ये कविताएं द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी की कलम से निकली हैं। बाल साहित्य में योगदान ने उनको 'बच्चों के गांधी' उपनाम दे दिया। आगरा के रोहता में जन्मे हिंदी साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी की कविताएं आज भी स्कूलों में पढ़ाई जाती हैं।

वह बच्चों के लिए कवि सम्मेलन की शुरुआत करने वालों में से हैं। वह उत्तर प्रदेश के शिक्षा सचिव भी रहे। माहेश्वरी का हिंदी के प्रचार-प्रसार में बड़ा योगदान है। महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला पर उन्होंने वृत्तचित्र बनाया था। केंद्रीय हिंदी संस्थान को वह तीर्थस्थल बताते और मानते थे। उन्होंने 40 से अधिक पुस्तकें लिखीं, इनमें से करीब 26 बाल साहित्य पर हैं। उनकी कई पुस्तकों और लेखों का देश की केंद्र व राज्य सरकारों ने राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के दौरान इस्तेमाल भी किया। गुंजन नामक उनकी संस्था के बैनर तले तमाम कार्यक्रम भी हुए। वे चाहते थे कि चार से 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए ऐसा साहित्य लिखा जाए, जो उनमें संस्कार पैदा करे।

How to cite this paper: Dr. Anjani Vashisht "Dwarka Prasad Maheshwari's Positive Impact on the Lives of Children" Published in International Journal of Trend in Scientific Research and Development (ijtsrd), ISSN: 2456-6470, Volume-6 | Issue-5, August 2022, pp.1741-1743, URL: www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd51741.pdf



IJTSRD51741

Copyright © 2022 by author (s) and International Journal of Trend in Scientific Research and Development Journal. This is an Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY 4.0) (<http://creativecommons.org/licenses/by/4.0>)



परिचय

हिंदी हैं हम: बाल साहित्य में योगदान ने नाम दिया 'बच्चों के गांधी', स्कूलों में आज पढ़ाई जाती हैं रचनाएं

उनकी कई पुस्तकों और लेखों का देश की केंद्र व राज्य सरकारों ने राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के दौरान इस्तेमाल भी किया। गुंजन नामक उनकी संस्था के बैनर तले तमाम कार्यक्रम भी हुए। वे चाहते थे कि चार से 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए ऐसा साहित्य लिखा जाए, जो उनमें संस्कार पैदा करे।[1]



वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो..., सूरज निकला चिड़िया बोलीं, कलियों ने भी आंखें खोलीं..., सामने पहाड़ हो, सिंह की दहाड़ हो...। आपके बचपन की यादों को ताजा कर देने वाली ये कविताएं द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी की कलम से निकली हैं। बाल साहित्य में योगदान ने उनको 'बच्चों के गांधी' उपनाम दे दिया।

आगरा के रोहता में जन्मे हिंदी साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी की कविताएं आज भी स्कूलों में पढ़ाई जाती हैं।

वह बच्चों के लिए कवि सम्मेलन की शुरुआत करने वालों में से हैं। वह उत्तर प्रदेश के शिक्षा सचिव भी रहे। माहेश्वरी का हिंदी के प्रचार-प्रसार में बड़ा योगदान है। महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला पर उन्होंने वृत्तचित्र बनाया था। केंद्रीय हिंदी संस्थान को वह तीर्थस्थल बताते और मानते थे। उन्होंने 40 से अधिक पुस्तकें लिखीं, इनमें से करीब 26 बाल साहित्य पर हैं। उनकी कई पुस्तकों और लेखों का देश की केंद्र व राज्य सरकारों ने राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के दौरान इस्तेमाल भी किया। गुंजन नामक उनकी संस्था के बैनर तले तमाम कार्यक्रम भी हुए। वे चाहते थे कि चार से 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए ऐसा साहित्य लिखा जाए, जो उनमें संस्कार पैदा करे।[2,3]

पहला बाल गीत संग्रह 'कातो और गाओ'

स्वतंत्रता के बाद उनका पहला बालगीत संग्रह 'कातो और गाओ' वर्ष 1949 में प्रकाशित हुआ। इसके बाद 'लहरें बढ़े चलो, बुद्धि बड़ी या बल, प्यारे गुब्बारे, सूरज सा चमकूँ मैं, सोने की कुल्हाड़ी, अंजन खंजन, सीढ़ी-सीढ़ी चढ़ते हैं हम, सतरंगा फूल, अपने काम से काम, जल्दी सोना-जल्दी जागना, मेरा वंदन है, ना मौसी ना, चरखे और चूहे, बाल रामायण' जैसी अनेकों कृतियों ने उन्हें बाल

साहित्य के शिखर पर पहुंचा दिया। एक प्रसंग से उनके योगदान को और भलीभांति समझा जा सकता है...बाल साहित्य के महारथी कृष्ण विनायक फड़के ने अंतिम इच्छा के रूप में अपनी शवयात्रा में द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी का बालगीत 'हम सब सुमन एक उपवन के' गाए जाने की इच्छा जताई थी।

रोहता में हुआ था जन्म

द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी का जन्म एक दिसंबर, 1916 को गांव रोहता में हुआ था। आगरा में ही उन्होंने शिक्षा प्राप्त की। शिक्षा विभाग में तमाम शहरों में अपनी सेवाएं दीं। वर्ष 1978 में सेवानिवृत्त होने के बाद गांव वापस आ गए। वर्ष 1981 में आलोक नगर में आकर बस गए। उनके लेखन विद्यार्थी जीवन से ही शुरू हो गया था लेकिन सेवानिवृत्ति के बाद और अधिक साहित्य सृजन किया। बाल साहित्य पर आधारित उन्होंने 26 पुस्तकें लिखीं। उनके लिखे साहित्य को स्कूलों की पाठ्यपुस्तकों में भी शामिल किया गया।

निधन से दो घंटे पहले पूरी की आत्मकथा

माहेश्वरी जी ने निधन से दो घंटे पहले अपनी आत्मकथा 'सीधी राह चलता रहा' पूरी की। 29 अगस्त, 1998 को वह चिरनिद्रा में लीन हो गए। उनके पुत्र डॉ. विनोद माहेश्वरी ने संपादन कर आत्मकथा को पूरा किया।

बहुत प्रिय थे उन्हें बच्चे पिताजी एक युग पुरुष थे। उनका बाल साहित्य सदियों तक दोहराया जाएगा। वह बच्चों के गांधी थे। बच्चे उनको बहुत प्रिय थे। बच्चे उनसे मिलने के लिए घर भी आते थे। पिताजी उन्हें अपनी कविताएं सुनाते। बरसों तक यह सिलसिला चला।[4,5]

विचार-विमर्श

द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी (१ दिसम्बर १९१६ - २९ अगस्त १९९८) हिन्दी के साहित्यकार थे। उनका जन्म आगरा के रोहता में हुआ था।

शिक्षा और कविता को समर्पित द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी का जीवन बहुत ही चित्ताकर्षक और रोचक है। उनकी कविता का प्रभाव सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार कृष्ण विनायक फड़के ने अपनी अंतिम इच्छा के रूप में प्रकट किया कि उनकी मृत्यु के पश्चात उनकी शवयात्रा में माहेश्वरी जी का बालगीत 'हम सब सुमन एक उपवन के' गाया जाए। फड़के जी का मानना था कि अंतिम समय भी पारस्परिक एकता का संदेश दिया जाना चाहिए। उत्तर प्रदेश सूचना विभाग ने अपनी होर्डिंगों में प्रायः सभी जिलों में यह गीत प्रचारित किया और उर्दू में भी एक पुस्तक प्रकाशित हुई, जिसका शीर्षक था, 'हम सब फूल एक गुलशन के', लेकिन वह दृश्य सर्वथा अभिनव और अपूर्व था जिसमें एक शवयात्रा ऐसी निकली जिसमें बच्चे मधुर धुन से गाते हुए चल रहे थे, 'हम सब सुमन एक उपवन के'। किसी गीत को इतना बड़ा सम्मान, माहेश्वरी जी की बालभावना के प्रति आदर भाव ही था। उनका ऐसा ही एक और कालजयी गीत है- वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो। उन्होंने बाल साहित्य पर 26 पुस्तकें लिखीं। इसके अतिरिक्त पांच पुस्तकें नवसाक्षरों के लिए लिखीं। उन्होंने अनेक काव्य संग्रह और खंड काव्यों की भी रचना की। बच्चों के कवि सम्मेलन का प्रारंभ और प्रवर्तन करने वालों के रूप में द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी का योगदान अविस्मरणीय है। वह उग्र के शिक्षा सचिव थे। उन्होंने शिक्षा के व्यापक प्रसार और

स्तर के उन्नयन के लिए अनथक प्रयास किए। उन्होंने कई कवियों के जीवन पर वृत्त चित्र बनाकर उन्हें याद करते रहने के उपक्रम दिए। सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जैसे महाकवि पर उन्होंने बड़े जतन से वृत्त चित्र बनाया। यह एक कठिन कार्य था, लेकिन उसे उन्होंने पूरा किया। बड़ों के प्रति आदर-सम्मान का भाव माहेश्वरी जी जितना रखते थे उतना ही प्रेम उदीयमान साहित्यकारों को भी देते थे। उन्होंने आगरा को अपना काव्यक्षेत्र बनाया। केंद्रीय हिंदी संस्थान को वह एक तीर्थस्थल मानते थे। इसमें प्रायः भारतीय और विदेशी हिंदी छात्रों को हिंदी भाषा और साहित्य का ज्ञान दिलाने में माहेश्वरी जी का अवदान हमेशा याद किया जाएगा। वह गृहस्थ संत थे।[6,7]

परिणाम

इस लेखक की रचनाएँ

हम सब सुमन एक उपवन के

काँटों में मिलकर हम सबने हँस हँस कर है जीना सीखा, एक सूत्र में बंधकर हमने हार गले का बनना सीखा। सबके लिए सुगन्ध हमारी ...

कौन सिखाता है चिड़ियों को

कौन सिखाता है बच्चों का लालन-पालन उनको? माँ का प्यार, दुलार, चौकसी कौन सिखाता उनको ...

मेरी वीणा में स्वर भर दो

मैं राही एकाकी तो क्या मंजिल तय करनी है, मुझको; रहने दो राह अपरिचित ही इसकी परवाह नहीं मुझको

गीत बनकर मैं मिलूँ

झलमलाती नील तारों से जड़ी साड़ी फबी है। गूँथ कर आकाश-गंगा मोतियों के हार लाई, पहिन कर रजनी उसे निज वक्ष पर कुछ मुस्कुराई। चित्र अंकित कर रही धरती सरित के तरल पट पर ...

वीर तुम बढ़े चलो

एक ध्वज लिये हुए एक प्रण किये हुए मातृ भूमि के लिये पितृ भूमि के लिये वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो ..

जलाते चलो ये दीए स्नेह भर-भर

जलाते चलो ये दिए स्नेह भर-भर

कभी तो धरा का अँधेरा मिटेगा!

जला दीप पहला तुम्हीं ने तिमिर की

चुनौती प्रथम बार स्वीकार की थी।

तिमिर की सरित पार करने, तुम्हीं ने

बना दीप की नाव तैयार की थी।

बहाते चलो नाव तुम वह निरंतर

कभी तो तिमिर का किनारा मिलेगा।

युगो से तुम्हीं ने तिमिर की शिला पर

दिए अनगिनत है निरंतर जलाए

समय साक्षी है कि जलते हुए दीप

अनगिन तुम्हारे, पवन ने बुझाए

मगर बुझ स्वयं ज्योति जो दे गए वे
उसी से तिमिर को उजाला मिलेगा। [8,9]
दिए और तूफ़ान की यह कहानी
चली आ रही और चलती रहेगी
जली जो प्रथम बार लौ उस दिए की
जली स्वर्ण सी है, और जलती रहेगी।
रहेगा धरा पर दिया एक भी यदि
कभी तो निशा को सवेरा मिलेगा

बढ़े चलो

वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो!
हाथ में ध्वजा रहे, बाल दल सजा रहे
ध्वज कभी झुके नहीं, दल कभी रुके नहीं
वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो!
सामने पहाड़ हो, सिंह की दहाड़ हो
तुम निडर डरो नहीं, तुम निडर डटो वहीं
वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो!
प्रात हो कि रात हो, संग हो न साथ हो
सूर्य से बढ़े चलो, चंद्र से बढ़े चलो
वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो!
एक ध्वज लिए हुए, एक प्रण किए हुए
मातृ भूमि के लिए, पितृ भूमि के लिए
वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो!
अन्न भूमि में भरा, वारि भूमि में भरा
यत्न कर निकाल लो, रत्न भर निकाल लो
वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो!

निष्कर्ष

आगरा को यह गौरव प्राप्त है कि माहेश्वरी जी जैसे वरिष्ठ साहित्यकार ने यहाँ जन्म लिया और संपूर्ण देश में आगरा का नाम रोशन किया।

द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी बाल गीतायन को रचकर बच्चों के गांधी के नाम से मशहूर हो गए। बाल गीतायन में उन्होंने बच्चों को 176 कविताओं का तोहफा दिया था। उनकी कविताएं आज भी बच्चों के स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल हैं। हर रचना से बाल मन आज भी प्रेरित होता है। उनकी अधिकांश रचनाएं देश प्रेम, वीरता, प्रकृति आदि पर आधारित हैं।

बच्चों के कवि सम्मेलन का प्रारंभ और प्रवर्तन करने वालों के रूप में द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी का अभूतपूर्व योगदान है। उन्होंने बाल साहित्य पर 26 पुस्तकें लिखीं। पांच पुस्तकें नवसाक्षरों के लिए भी लिखीं। उन्होंने अनेक काव्य संग्रह और खंड काव्यों की भी रचना की।

प्रसिद्ध जनकवि गिरीश अशक उन्हें स्मरण करते हुए कहते हैं मेरे लिए परम सौभाग्य की बात ये रही कि 1996 में मेरे प्रथम काव्य संग्रह "आखिर कब तक ?" का नागरी प्रचारिणी सभा में विमोचन

कालजयी रचनाकार आदरणीय द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी जी के करकमलों से हुआ था।

आगरा राइटर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष व वरिष्ठ साहित्यकार डॉ अनिल उपाध्याय ने द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी को नमन करते हुए इस बात पर क्षोभ प्रकट किया कि आगरा का साहित्यजगत अपने ही विद्वजनों को विस्मृत करता जा रहा है।

सोशल मीडिया पर काफी संख्या में लोग उनकी कविताओं को पोस्ट करके उन्हें याद कर रहे हैं व अपने श्रद्धा सुमन समर्पित कर रहे हैं। इनमें साहित्यकार डॉ अंगद धारिया, परमानन्द शर्मा, अशोक कुमार अश्रुसुशील सरित, भरतदीप माथुर आदि शामिल हैं। [10]

उनकी प्रमुख रचनाओं में से कुछ इस प्रकार हैं –
सामने पहाड़ हो सिंह की दहाड़ हो
तुम निडर डरो नहीं तुम निडर डटो वहीं
वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो!

एक अन्य कविता की प्रेरक पंक्तियां हैं –
उठो धरा के अमर सपूतो
पुनः नया निर्माण करो।
जन-जन के जीवन में फिर से
नई स्फूर्ति, नव प्राण भरो।

संदर्भ

- [1] धीरेन्द्र यादव. "जब अंतिम यात्रा में 'राम नाम सत्य' की जगह, बच्चों ने गाया प्रसाद माहेश्वरी का ये गीत". पत्रिका न्यूज़. अभिगमन तिथि 2020-08-kigj22. तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
- [2] जब अंतिम यात्रा में 'राम नाम सत्य' की जगह, बच्चों ने गाया द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी का ये गीत
- [3] 'यदि होता किन्नर नरेश मैं' वाले कवि द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी की याद
- [4] उठो धरा के अमर सपूतो ~ द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी | Utho Dhara Ke Amar Sapooton-Dwarika Prasad Maheshwari
- [5] Itne Unche Utho ~ Dwarika Prasad Maheshwari | इतने ऊँचे उठो ~ द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी
- [6] MoolMantra ~ Dwarika Prasad Maheshwari | मूलमंत्र ~ द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी
- [7] कौन सिखाता है चिड़ियों को ~ द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी
- [8] हम सब सुमन एक उपवन के – द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी
- [9] Yadi Hota Kinnar Nares Main ~ Dwarika Prasad Maheshwari | यदि होता किन्नर नरेश मैं ~ द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी
- [10] Main Suman Hun ~ Dwarika Prasad Maheshwari | मैं सुमन हूँ – द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी